



परीक्षा-गुरु प्रकरण-६ भले बुरे की पहचान

हिन्दी
A D D A

परीक्षा-गुरु प्रकरण-६

भले बुरे की पहचान

धर्म, अर्थ शुभ कहत कोउ काम, अर्थ कहिं आन

कहत धर्म कोउ अर्थ कोउ तीनहुं मिल शुभ जान

मनुस्मृति.

"आप के कहनें मूजब किसी आदमी की बातों सै उस्का स्वभाव नहीं जाना जाता फिर उस्का स्वभाव पहचान्ने के लिये क्या उपाय करें ?" लाला मदनमोहननें तर्क की.

"उपाय करनें की कुछ जरूरत नहीं है, समय पाकर सब अपने आप खुल जाता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मनुष्य के मन में ईश्वरनें अनेक प्रकार की वृत्ति उत्पन्न की हैं जिन्में परोपकारकी इच्छा, भक्ति और

न्याय परता धर्मप्रवृत्ति में गिनी जाती हैं; दृष्टांत और अनुमानादि के द्वारा उचित अनुचित कामों की विवेचना, पदार्थज्ञान, और बिचारशक्ति का नाम बुद्धिबृत्ति है। बिना बिचारे अनेकबार के देखनें, सुन्नें आदि सै जिस काम में मन की प्रवृत्ति हो, उसै आनुसंगिक प्रवृत्ति कहते हैं। काम, सन्तानस्नेह, संग्रह करने की लालसा, जिघांसा और आत्मसुख की अभिरुचि इत्यादि निकृष्ट प्रवृत्ति में शामिल हैं और इन् सब के अविरोध सै जो काम किया जाय वह ईश्वर के नियमानुसार समझा जाता है परन्तु किसी काम में दो बृत्तियों का विरोध किसी तरह न मिट सके तो वहां जरूरत के लायक आनुसंगिक प्रवृत्ति और निकृष्ट प्रवृत्ति को धर्मप्रवृत्ति और बुद्धि बृत्ति सै दबा देना चाहिये जैसे श्रीरामचन्द्रजी नें राज पाट छोड़ कर बन में जाने सै धर्म प्रवृत्ति को उत्तेजित किया था।"यह तो सवाल और जवाब और हुआ मैंने आपसै मनुष्य का स्वभाव पहिचान्ने की राय पूछी थी आप बीच में मन की बृत्तियों का हाल कहनें लगे" लाला मदनमोहन नें कहा।

"इसी सै आगे चलकर मनुष्य के स्वभाव पहचान्ने की रीति मालूम होगी-"

"पर आप तो काम सन्तानस्नेह आदि के अविरोध सै भक्ति और परोपकारादि करने के लिये कहते हैं और शास्त्रों में काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक की बारम्बार निन्दा की है फिर आप का कहना ईश्वर के नियमानुसार कैसे हो सकता है ?" पंडित पुरुषोत्तमदास बीच में बोल उठे।

"मैं पहले कह चुका हूँ कि धर्मप्रवृत्ति और निकृष्टप्रवृत्ति में विरोध हो वहां जरूरत के लायक धर्मप्रवृत्ति को प्रबल मान्ना चाहिये परन्तु धर्मप्रवृत्ति और बुद्धिप्रवृत्ति का बचाव किए पीछे भी निकृष्टप्रवृत्ति का त्याग किया जायगा तो ईश्वर की यह रचना सर्वथा निरर्थक ठैरेगी पर ईश्वर का कोई काम निरर्थक नहीं है। मनुष्य निकृष्टप्रवृत्ति के बस होकर धर्मप्रवृत्ति और बुद्धिबृत्ति की रोक नहीं मान्ता इसी सै शास्त्र में बारम्बार उस्का निषेध किया है। परन्तु धर्मप्रवृत्ति और बुद्धि को मुख्य माने पीछे उचित रीति सै निकृष्टप्रवृत्ति का आचरण किया जाये तो गृहस्थ के लिये दूषित नहीं हो सकता। हां उस्का नियम उल्लंघन कर किसी एक बृत्ति की प्रबलता सै और, और बृत्तियों के विपरीत आचरण कर कोई दुःख पावे तो इस्में किसी बस नहीं। सबसै मुख्य धर्मप्रवृत्ति है परन्तु उस्में भी जबतक और बृत्तियों के हक की रक्षा न की जायगी अनेक तरह के बिगाड़ होने की सम्भावना बनी रहैगी।"

"मुझको आपकी यह बात बिल्कुल अनोखी मालूम होती है भला परोपकारादि शुभ कामों का परिणाम कैसे बुरा हो सकता है ?" पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा।

"जैसे अन्न प्राणाधार है परन्तु अति भोजन सै रोग उत्पन्न होता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "देखिये परोपकार की इच्छा ही अत्यन्त उपकारी है परन्तु हृद् सै आगे बढ़नें पर वह भी फ़िजूलखर्ची समझी जायगी और अपने कुटुंब परवारादि का सुख नष्ट हो जायगा जो आलसी अथवा अधर्मियों की सहायता की तो उस्सै संसार में आलस्य और पाप की बृद्धि होगी इसी तरह कुपात्र में भक्ति होने सै लोक, परलोक दोनों नष्ट हो जायंगे। न्यायपरता यद्यपि सब बृत्तियों को समान रखने वाली है परन्तु इस्की अधिकता सै भी मनुष्य के स्वभाव में मिलनसारी नहीं रहती, क्षमा नहीं रहती। जब बुद्धि बृत्ति के कारण किसी वस्तु के बिचार में मन अत्यन्त लग जायगा तो और जान्ने लायक पदार्थों की अज्ञानता बनी रहैगी मन को अत्यन्त परिश्रम होने सै वह निर्बल हो जायगा और शरीर का परिश्रम बिल्कुल न होने के कारण शरीर भी बलहीन हो

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-vi-bhale-bure-kee-pahachaan/>

जायगा. आनुसंगिक प्रवृत्ति के प्रबल होने से जैसा संग होगा वैसा रंग तुरत लग जाया करेगा. काम की प्रबलता से समय असमय और स्वस्त्री परस्त्री आदि का कुछ बिचार न रहैगा. संतानस्नेह की बृत्ति बढ़ गई तो उसके लिये आप अधर्म करने लगोगे, उस्को लाड, प्यार में रखकर उसके लिये जुदे कांटे बोयेगा. संग्रह करने की लालसा प्रबल हुई तो जोरी से, चोरी से, छल से, खुशामद से, कमाने की डिढ़्या पड़ेगी और खाने खर्चने के नाम से जान निकल जायगी. जिघांसा बृत्ति प्रबल हुई तो छोटी, छोटी सी बातों पर अथवा खाली संदेह पर ही दूसरों का सत्यानाश करने की इच्छा होगी और दूसरों को दंड देती बार आप दंड योग्य बन जायगा. आत्म सुख की अभिरुचि हृद से आगे बढ़ गई तो मन को परिश्रम के कामों से बचाने के लिये गाने बजाने की इच्छा होगी, अथवा तरह, तरह के खेल तमाशे हंसी चुहल की बातें, नशेबाजी, और खुशामद में मन लगैगा. द्रव्य के बल से बिना धर्म किये धर्मात्मा बना चाहेंगे, दिन रात बनाव सिंगार में लगे रहेंगे. अपनी मानसिक उन्नति करने के बदले उन्नति करने वालों से द्रोह करेंगे, अपनी झूटी ज़िद निबाहने में सब बढ़ाई समझेंगे, अपने फ़ायदे की बातों में औरों के हक का कुछ बिचार न करेंगे. अपने काम निकालने के समय आप खुशामदी बन जायंगे, द्रव्य की चाहना हुई तो उचित उपायों से पैदा करने के बदले जुआ, बदनी धरोहड़, रसायन, या धरी ढकी दोलत ढूँडते फिरेंगे."

"आप तो फिर वोही मन की बृत्तियों का झगड़ा ले बैठे. मेरे सवाल का जवाब दीजिये या हार मानिये" लाला मदनमोहन उखता कर कहने लगे.

"जब आप पूरी बात ही न सुनें तो मैं क्या जवाब दूं? मेरा मतलब इतने बिस्तार से यह था कि बृत्तियों का सम्बन्ध मिला कर अपना कर्तव्य कर्म निश्चय करना चाहिये. किसी एक बृत्ति की प्रबलता से और बृत्तियों का बिचार किया जायगा तो उस्में बहुत नुकसान होगा" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे:-

"वाल्मीकि रामायण में भरत से रामचन्द्र ने और महाभारत में नारदमुनि ने राजायुधिष्ठिर से ये प्रश्न किया है "धर्महि धन, अर्थहि धरम बाधक तो कहूं नाहिं ?।। काम न करत बिगार कछु पुन इन दोउन मांहिं ?।।"

"बिदुरप्रजागर में बिदुरजी राजाधृतराष्ट्र से कहते हैं धर्म अर्थ अरु काम, यथा समय सेवत जु नर ।। मिल तीनहुँ अभिराम, ताहि देत दुहुं लोक सुख ।।"

"बिष्णु पुराण में कहा है "धर्म बिचारै प्रथम पुनि अर्थ, धर्म अविरोधि ।। धर्म, अर्थ बाधा रहित सेवै काम सुसोधि ।।"

"रघुवंश में अतिथि की प्रशंसा करतीबार महाकवि कालिदास ने कहा है "निरीनीति कायरपनो केवल बल पशुधर्म ।। तासों उभय मिलाय इन सिद्ध किये सब कर्म ।।"

"हीन निकम्मे होत हैं बली उपद्रववान ।। तासों कीन्हें मित्र तिन मध्यम बल अनुमान ।।"

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-vi-bhale-bure-kee-pahachaan/>

"चाणक्य में लिखा है "बहुत दान ते बलि बँध्यो मान मरो कुरुराज ॥ लंपट पन रावण हत्यो अति वर्जित सब काज ॥"

"फ्रीजिया के मशहूर हकीम एपिक्टेट्स की सब नीति इन दो बचनों में समाई हुई है कि "धैर्य सै सहना" और "मध्यम भाव सै रहना" चाहिये.

"कुरान में कहा है कि "अय (लोगों) ! खाओ, पीओ परन्तु फिजूलखर्ची न करो ॥"

"बृन्द कहता है "कारज सोई सुधर है जो करिये समभाय ॥ अति बरसे बरसे बिना जाँ खेती कुम्हलाय ॥"

"अच्छा संसार में किसी मनुष्य का इसरीति पर पूरा बरताव भी आज तक हुआ है ?" बाबू बैजनाथ नें पूछा.

"क्यों नहीं देखिये पाईसिस्ट्रेट्स नामी एथीनियन का नाम इसी कारण इतिहास में चमक रहा है. वह उदार होने पर फिजूलखर्च न था और किसी के साथ उपकार कर के प्रत्युपकार नहीं चाहता था बल्कि अपनी मानवरी की भी चाह न रखता था. वह किसी दरिद्र के मरने की खबर पाता तो उसकी क्रिया कर्म के लिये तत्काल अपने पास सै खर्च भेज देता, किसी दरिद्र को बिपद ग्रस्थ देखता तो अपने पास सै सहायता कर के उसके दुःख दूर करने का उपाय करता, पर कभी किसी मनुष्य को उसकी आवश्यकता सै अधिक देकर आलसी और निरुद्यमी नहीं होने देता था. हां सब मनुष्यों की प्रकृति ऐसी नहीं हो सकती, बहुधा जिस मनुष्य के मन में जो वृत्ति प्रबल होती है वह उसको खींच खांच कर अपनी ही राह पर ले जाती है जैसे एक मनुष्य को जंगल में रुपों की थैली पड़ी पावै और उस्समय उसके आस पास कोई न हो तब संग्रह करने की लालसा कहती है कि "इसै उठा लो" सन्तानस्नेह और आत्म सुख की अभिरुचि सम्मति देती है कि "इस काम सै हम को भी सहायता मिलेगी" न्याय परता कहती है कि "न अपनी प्रसन्नता सै यह किसी नें हमको दी न हमनें परिश्रम करके यह किसी सै पाई फिर इस पर हमारा क्या हक है ? और इस्का लेना चोरी सै क्या कम है ? इसै पर धन समझ कर छोड़ चलो" परोपकार की इच्छा कहती है कि "केवल इस्का छोड़ जाना उचित नहीं, जहां तक हो सके उचित रीति सै इस्को इस्के मालिक के पास पहुँचाने का उपाय करो" अब इन् बृत्तियों सै जिस बृत्ति के अनुसार मनुष्य काम करे वह उसी मेल में गिना जाता है यदि धर्मप्रबृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य अच्छा समझा जायगा, और इस रीति सै भले बुरे मनुष्यों की परीक्षा समय पाकर अपने आप हो जायगी बल्कि अपनी बृत्तियों को पहचान कर मनुष्य अपनी परीक्षा भी आप कर सकेगा, राजपाट, धन दौलत, शिक्षा, स्वरूप, बंश मर्यादा सै भले बुरे मनुष्य की परीक्षा नहीं हो सकती. बिदुरजी नें कहा है, "उत्तमकुल आचार बिन करे प्रमाण न कोई ॥ कुलहीनो आचारयुत लहे बड़ाई सोइ ॥"



परीक्षा-गुरु – Pariksha Guru

परीक्षा गुरु हिन्दी का प्रथम उपन्यास था जिसकी रचना भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध नाटककार लाला श्रीनिवास दास ने 25 नवम्बर, 1882 को की थी।

परीक्षा गुरु पहला आधुनिक हिंदी उपन्यास था। इसने संपन्न परिवारों के युवकों को बुरी संगति के खतरनाक प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप ढीली नैतिकता के प्रति आगाह किया। परीक्षा गुरु नए उभरते मध्यम वर्ग की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाता है। पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए औपनिवेशिक समाज के अनुकूल होने की कठिनाई में फंस जाते हैं। हालांकि यह जाहिर तौर पर विशुद्ध रूप से 'पढ़ने के आनंद' के लिए लिखा गया था। औपनिवेशिक आधुनिकता की दुनिया भयावह और अप्रतिरोध्य दोनों लगती है।

उपन्यास पाठक को जीने का 'सही तरीका' सिखाने की कोशिश करता है और सभी समझदार पुरुषों से सांसारिक बुद्धिमान और व्यावहारिक होने, अपनी परंपरा और संस्कृति के मूल्यों में निहित रहने और सम्मान और सम्मान के साथ जीने की उम्मीद करता है। पात्र अपने कार्यों के माध्यम से दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ने का प्रयास करते हैं; वे नई कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाते हैं, व्यापारिक प्रथाओं का आधुनिकीकरण करते हैं, भारतीय भाषाओं के उपयोग को बदलते हैं जिससे वे पश्चिमी विज्ञान और भारतीय ज्ञान दोनों को अपनाने में सक्षम हो जाते हैं। युवाओं से समाचार पत्र पढ़ने की स्वस्थ आदत विकसित करने का आग्रह किया जाता है। यह सब पारंपरिक मूल्यों का त्याग किए बिना हासिल किया जाना चाहिए।

<https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-vi-bhale-bure-kee-pahachaan/>

इस उपन्यास उपन्यास 41 छोटे-छोटे प्रकरणों में विभक्त है। कथा तेजी से आगे बढ़ती है और अंत तक रोचकता बनी रहती है। पूरा उपन्यास नीतिपरक और उपदेशात्मक है। उसमें जगह-जगह इंग्लैंड और यूनान के इतिहास से दृष्टांत दिए गए हैं। ये दृष्टांत मुख्यतः ब्रजकिशोर के कथनों में आते हैं। इनसे उपन्यास के ये स्थल आजकल के पाठकों को बोझिल लगते हैं। उपन्यास में बीच-बीच में संस्कृत, हिंदी, फारसी के ग्रंथों के ढेर सारे उद्धरण भी ब्रज भाषा में काव्यानुवाद के रूप में दिए गए हैं। हर प्रकरण के प्रारंभ में भी ऐसा एक उद्धरण है। उन दिनों काव्य और गद्य की भाषा अलग-अलग थी। काव्य के लिए ब्रज भाषा का प्रयोग होता था और गद्य के लिए खड़ी बोली का। लेखक ने इसी परिपाटी का अनुसरण करते हुए उपन्यास के काव्यांशों के लिए ब्रज भाषा चुना है।

परीक्षा-गुरु - Pariksha Guru in Hindi

1. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१ सौदागरकी दुकान
2. परीक्षा-गुरु प्रकरण- २ अकालमें अधिकमास
3. परीक्षा-गुरु प्रकरण- ३ संगतिका फल
4. परीक्षा-गुरु प्रकरण-४ मित्रमिलाप
5. परीक्षा-गुरु प्रकरण-५ विषयासक्त
6. परीक्षा-गुरु प्रकरण-६ भले बुरे की पहचान
7. परीक्षा-गुरु प्रकरण – ७ सावधानी (होशयारी)
8. परीक्षा-गुरु प्रकरण-८ सबमें हां
9. परीक्षा-गुरु प्रकरण-९ सभासद

10. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१० प्रबन्ध (इन्तजाम)
11. परीक्षा-गुरु प्रकरण-११ सज्जनता
12. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१२ सुख दुःख
13. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३ बिगाड़का मूल-बि वाद
14. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१४ पत्रव्यवहा
15. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१५ प्रिय अथवा पिय ?
16. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१६ सुरा (शराब)
17. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१७ स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार.
18. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१८ क्षमा
19. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१९ स्वतन्त्रता
20. परीक्षा-गुरु प्रकरण – २० कृतज्ञता

21. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२१ पति ब्रता
22. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२ संशय
23. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२३ प्रामाणिकता
24. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२४ (हाथसै पै दा करने वाले) (और पोतडों के अमीर)
25. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२५ साहसी पुरुष
26. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२६ दिवाला
27. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२७ लोक चर्चा (अफवाह).
28. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२८ फूट का काला मुंह
29. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२९ बात चीत.
30. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३० नै राश्य (नाउम्मेदी).
31. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३१ चालाक की चूक
32. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३२ अदालत
33. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३३ मित्रपरीक्षा
34. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३४ हीनप्रभा (बदरोबी)
35. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३५ स्तुति निन्दा का भेद
36. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३६ धोके की टट्टी
37. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३७ बिपत्तमें धैर्य
38. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३८ सच्ची प्रीति
39. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३९ प्रेत भय
40. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४० सुधारने की रीति
41. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४१ सुखकी परमावधि